मतवाला-मांझी

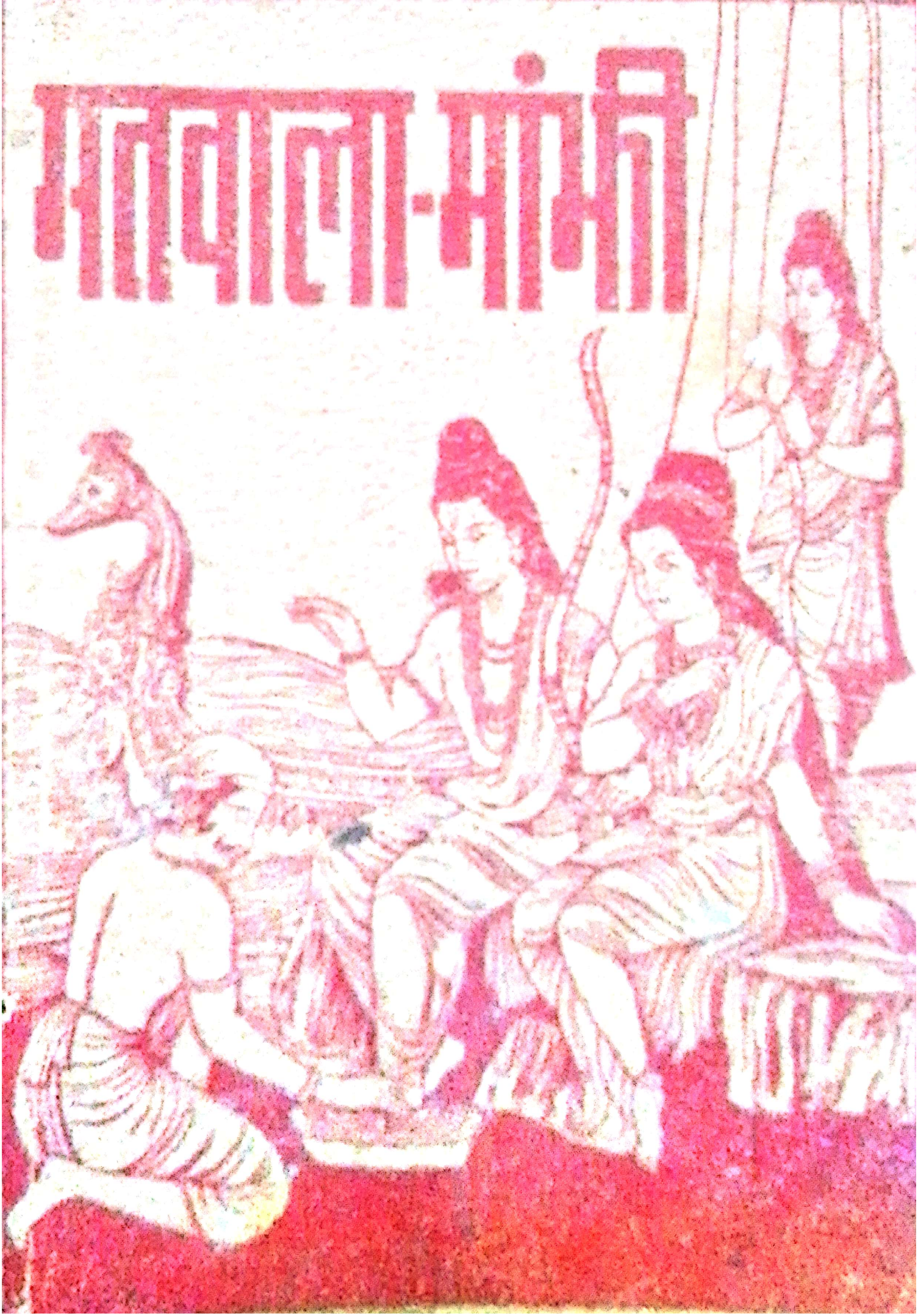

Scanned with OKEN Scanner

मतवाला मांझी

(श्री राम केवट सम्वाद)

राम पुकारत केवटहि, करत अनसुनी कान ।
जग टेरत जेहि मगन मन, सोई टेरत मोहि आन ॥

प्रणयिता

आशु कवि श्री कुञ्जविहारी 'शुक्ल'

मानस मर्यादा मार्तण्ड

—: प्रकाशक :—

"धर्मधाम"

१२८ डी / २४ किदवई नगर, कानपुर (उ० प्र०)

[पंचमावृत्ति] सम्वत् २०३८ [तीन रुपए

● राम राज्य ●

यदि करना है राम राज्य का, भारत में सच्चा आह्वान।
तो निश्चय ही करना होगा, घर घर में मानस का गान॥
किन्तु न वह केवल वाणी से, स्वर साधन हो पायेगा।
होगा जब सारा समाज ही, करने को जुट जायेगा॥

सीखेंगे भ्रातृत्व भरथ से, लक्ष्मण से सेना का ज्ञान।
मूक भरी भाषा से सीखेंगे, रिपुसूदन का बलिदान॥
कौशिल्या सी मातायें, मातृत्व भाव तैयार करें।
महिलाओं में आज सुमित्रा, सा ऊँचा आचार करें॥

भारत में फिर भरथ भाव सी, कैकेयी करदे सन्तान॥
जिसमें भारत को भारत कहने में, हो हमको अभिमान॥
नारी सीता सी बन जाये, अपना कर अपना नारित्व।
आँखों से दिखलादें कविवर, तुलसी का साकार कवित्व॥

पिता धर्म दशरथ से सीखें, गुरु वशिष्ट से सीखें ज्ञा
धर्म राष्ट्र की मन्त्रि मण्डली, ले सुमन्त से मन्त्र विधान
इस केवट प्रसंग से सीखें, हम छोटों का अपनान
और सीखलें छोटे भी अपने, गुरु जन का गुन गाना
चित्रकूट के मृदु प्रसंग से, सीखें उलझन सुलझान
माया मृग की मञ्जु कथा से, कभी न भ्रम में पड़ जान
सीखें हम बजरंग बली से, सच्ची सेवा स्वामी की
और सीखलें भक्त बिभीषण से, शिक्षा अनुगामी की
रावण के चरित्र से सीखें, डरना अत्याचारों से
सोने की लंका होने पर, बचे रहें व्यभिचारों से
भारतीय नर-नारी करलें, इतना यह सब पारायण
तभी सार्थक पढ़ना होगा, श्री तुलसीकृत रामायण।
निश्चय ही तब राम राज्य का, आह्वाहन हो जायेगा
जिसमें ध्रुव वैभव अनन्त का, महा-सिन्धु लहरायेगा
शोषित वा शोषक कोई भी, कहीं नहीं दिखलायेगा।
'शुक्ल' भारती साम्यवाद का, स्वस्तिक ध्वज फहरायेगा।

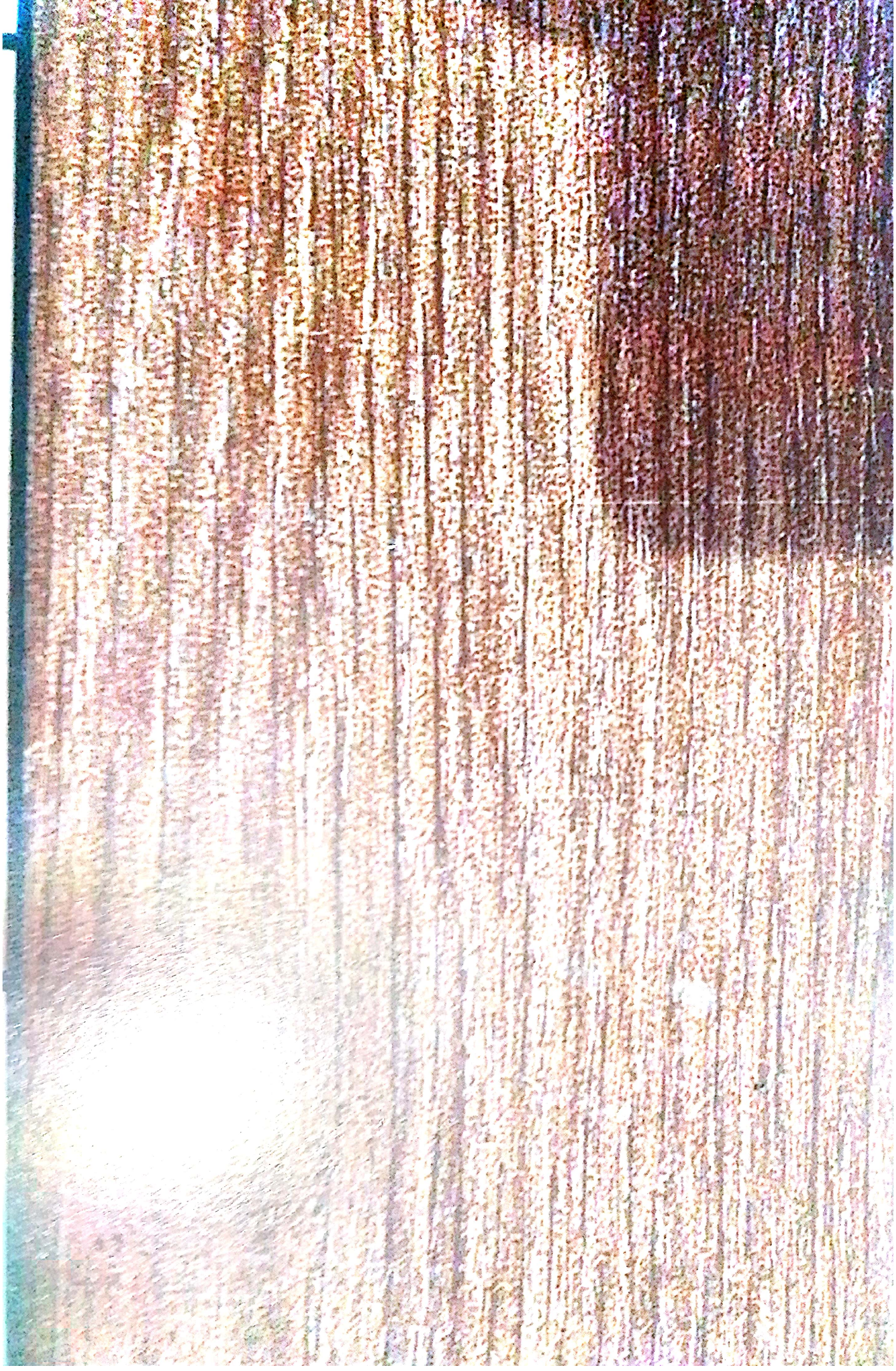

Scanned with OKEN Scanner